रजि०/एण्डी०-४८/२०२४-२०२६
वैधता कलेण्डर वर्ष २०२४-२०२६
पोस्टेज अग्रिम भुगतान

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
पाक्षिक मुखपत्र

राष्ट्रभाषा सन्देश

भाग ४४ १५ मार्च-३० मार्च, २०२४; २४ फाल्गुन-९ चैत्र शक १९४५ • प्रधान सम्पादक : कुन्तक मिश्र अंक-१३-१४

प्रयागराज में उमाकान्त मालवीय पर साहित्यिक गोष्ठी

साहित्य के सिंहद्वार पर स्वास्तिक-जैसे उमाकान्त

-अम्बर

प्रयागराज। प्रसिद्ध कवि शिव ओम अम्बर ने उमाकान्त मालवीय को साहित्य के सिंहद्वार पर स्वास्तिक उकेरनेवाला रचनाकार बताया। कहा, ऐसे लोग विरले होते हैं। वह ऐसे नव गीतकार थे, जिन्होंने समय को जीने के साथ ही उस दौर के दंश से खुद को बचाये रखा। दो दिवसीय कहकशाँ साहित्योत्सव के प्रथम दिन उमाकान्त मलवीय से जुड़े संस्मरणों के साथ ही उनके काव्य 'राघव राग' पर भी चर्चा हुई।

महात्मा गाँधी मार्ग स्थित प्रह्लादनाथ प्रेक्षागृह में साहित्य, कला और संगीत को समर्पित दो दिवसीय कहकशाँ साहित्योत्सव की शुरुआत हुई। पहला दिन जाने-माने नवगीतकार उमाकान्त मालवीय पर केन्द्रित रहा। कवि शिव ओम अम्बर का कहना था कि उमाकान्त नवगीत के वर्ण-विधान, प्रतिभा के प्रणम्य प्रतिमान और अक्षर-अक्षर अनुष्ठान थे। उनके हृदय में अमृत का क्षीरसागर था और शब्दों में प्रतिभा के प्रकाश की किरण।

उन्होंने पाँच दशकों में उनके पाँच चुनिन्दा शीर्षकों पर भी बात रखी। कहा, उनकी कविताओं में आयातित संग्राम का चित्रण बखूबी मिलता है। वह घुटन के स्थान पर साहित्य के सिंहद्वार पर स्वास्तिक उकेरनेवाले गीतकार थे। वह उनके गीत की पंक्तियाँ भी दोहराते हैं- खोलो जी बन्द द्वार लक्ष्मी घर आयी हैं....।

इससे पहले कवि **सुधांशु उपाध्याय** ने कहा कि उमाकान्त मालवीय में धैर्य और साधना का अद्‌भुत समन्वय था। वह नवगीतों में अनुवाद तब कर रहे थे, जब नयी कविता का बोलबाला था। पाठ्यक्रमों में नयी कविता और मंचों पर नवगीत का डंका बज रहा था। वह देश के पहले सांस्कृतिक चेतना के कवि थे। उन्होंने हमेशा मनुष्यता का मनुष्य से और सभ्यता-समाज के बीच समन्वय स्थापित किया।

वह हमेशा कहते थे कि जिसे राग की पहचान नहीं है, वह कविता नहीं रच सकता। इनके बाद **प्रो० हेरम्ब चतुर्वेदी** और वरिष्ठ पत्रकार **प्रदीप भटनागर** ने मालवीय की कृति 'राघव राग' पर रोशनी डाली। इस दौरान **प्रो० अनिता गोपेश, प्रो० धनंजय चोपड़ा** और **अजामिल** ने भी संस्मरण साझा किये।

गीत से साहित्योत्सव में उमाकान्त का श्रृंगार

प्रयागराज। 'यादों की वेदी में अब तक कलश स्नेह रस का ढुरता है- तुमको शहर याद करता है, खूब याद है कैसे तुमने उपवन को संस्कार दिया।' युवा कवि **उत्कर्ष अग्निहोत्री** की इस काव्य-पंक्ति ने रविवार को कहकशाँ साहित्योत्सव में गीतकार उमाकान्त मालवीय के व्यक्तित्व का श्रृंगार किया। साहित्योत्सव का दूसरा व अन्तिम दिन इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन के सभागार में बीता। वहाँ वरिष्ठ साहित्यकार **ममता कालिया** के सम्बोधन से लेकर पद्मश्री डॉ० सोमा घोष की गजलों ने भी आयोजन को रंगत दी। कवियों ने काव्य-पाठ भी किया।

आयोजन की शुरुआत में ममता कालिया ने कहकशाँ साहित्योत्सव की सराहना की। कहा कि पिछले वर्ष रवीन्द्र कालिया स्मृति आयोजन की शुरुआत कर इस संस्था ने रवि (पति को रवि नाम से ही सम्बोधित करती हैं) को जो सम्मान दिया, उससे साहित्य को एक नया आयाम मिला। कहा कि उमाकान्त मालवीय की रचनाएँ ऐसी हैं, जिनसे समाज की वास्तविकता पता चलती है। **ओम निश्चल** और आयोजक **आनन्द कक्कड़** ने भी इस पहले सत्र में उमाकान्त मालवीय के साहित्य का परिचय कराया।

युवा कहानीकार **कुणाल सिंह** को उनके १३ कहानियों के संग्रह 'अन्य कहानियाँ तथा झूठ' के लिए २०२४ का रवीन्द्र कालिया कथा कथेतर सम्मान और कवि **विनोद श्रीवास्तव** को उमाकान्त मालवीय स्मृति सम्मान दिया गया। साहित्योत्सव के तीसरे सत्र में कवि-सम्मेलन और मुशायरा हुआ, जिसमें **डॉ० शिव ओम अम्बर, ओम निश्चल, राजेश रेड्डी, विनोद श्रीवास्तव, यश मालवीय, भावना तिवारी, शाहिद अंजुम, आलोक अविरल, अंशु मालवीय, शिशिर सोमवंशी और उत्कर्ष अग्निहोत्री**-जैसे कवियों ने अपनी काव्य रचनाएँ प्रस्तुत कीं। **अनिता गोपेश, डॉ० शान्ति चौधरी, डॉ० अभिलाषा चतुर्वेदी, प्रताप सोमवंशी, पल्लवी रंगकर्मी, प्रवेश, शेखर, प्रो० हरेम्ब चतुर्वेदी, अंशु मालवीय** समेत अन्य साहित्य-प्रेमी उपस्थित रहे।

गजलों से सजी शाम : गजल कंसर्ट की शुरुआत डॉ० सोमा घोष ने हमारी अटरिया पे आओ रे साँवरिया देखा देखी तनिक होई जाए.... सुनाकार की। इसके बाद उन्होंने मैं ढूँढ़ रहा हूँ, मेरी वो शमाँ जो वज्म की हर चीज की दीवाना बना दे.... आदि गजलों की धारा बहाई। (दैनिक जागरण से साभार)

• *शेष पृष्ठ चार पर*

• पृष्ठ एक का शेष

प्रयागराज में उमाकान्त मालवीय........

इलाहाबाद शऊर का शहर है

–ममता कालिया

प्रयागराज। कहकशाँ साहित्योत्सव की दूसरी और आखिली शाम रविवार को किसी के लिए खास बन गयी। एक तरफ ठुमरी गायिका पद्मश्री सोमा घोष ने बेगम अख्तर की गजल गायिकी से लेकर ठुमरी तक की यात्रा से साहित्योत्सव को अभिसिक्त किया, तो दूसरी ओर जानी-मानी कथाकार ममता कालिया ने इलाहाबाद को शऊर और मुहब्बतों के शहर के रूप में रेखांकित कर इस समागम को ऊँचाई प्रदान की। शाम करीब चार बजे इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन के कन्वेशन सेण्टर में कथाकार **ममता कालिया** और पत्रकार **प्रताप सोमवंशी** ने रवीन्द्र कालिया कथा कथेतर सम्मान कहानी पत्रिका के सम्पादक कुणाल सिंह को प्रदान किया।

ममता कालिया ने कहा, इलाहाबाद सऊर का शहर है। यह नयी पीढ़ी को गढ़ने, रचनेवाला शहर है। यहाँ बेइन्तहा मोहब्बत मिलती है। इसीलिए दिल्ली में रहकर भी उनका दिल इलाहाबाद में ही लगा रहता है। उन्होंने कुणाल सिंह को सम्भावनाशील कथाकार बताया।

उमाकान्त मालवीय कविता सम्मान कानपुर के गीतकार **विनोद श्रीवास्तव** को प्रदान किया गया। इसके बाद शाम को हुए कवि-सम्मेलन में **डॉ० शिव ओम अम्बर, डॉ० ओम निश्चल, राजेश रेड्डी, प्रताप सोमवंशी, विनोद श्रीवास्तव, यश मालवीय, भावना तिवारी, शाहिल अंजुम, आलोक अविरल, अंशु मालवीय, शिशिर सोमवंशी** और **उत्कर्ष अग्निहोत्री** ने काव्यपाठ किया।

अन्त में आनन्द कक्कड़ ने कवियों और अतिथियों के प्रति आभार प्रगट किया। इस मौके पर **प्रदीप भटनागर, प्रो० धनंजय चोपड़ा, प्रो० अनिता गोपेश, प्रो० हेरम्ब चतुर्वेदी, अजामिल** समेत कई साहित्यकार उपस्थित थे। (अमर उजाला से साभार)

संस्कृत ने देश की विविधता को एकता में पिरोया है : राष्ट्रपति

नई दिल्ली : केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षा-समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना हमारी सांस्कृतिक चेतना का परिचायक है। हमारी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी बातें संस्कृत भाषा में संचित व संरक्षित हैं, इसलिए संस्कृत भाषा में उपलब्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रचार-प्रसार राष्ट्र की सेवा है। संस्कृत के ग्रन्थ विविधता से भरे हैं। इसने देश की विविधता को एकता में पिरोया है।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय का दीक्षा-समारोह गुरुवार को यशोभूमि में आयोजित हुआ। समारोह में केन्द्रीय शिक्षामन्त्री व केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलाधिपति धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि संस्कृत हमारी अस्मिता, सभ्यता व संस्कृति का मूल आधार है। यह कई भाषाओं की जननी है। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी संस्कृत भाषा व शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्पष्ट रोडमैप के तहत प्रयास कर रहे हैं। **(दैनिक जागरण से साभार)**

शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र की सेवा होना चाहिए

प्रयागराज। शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र की सेवा होना चाहिए। हर व्यक्ति का फर्ज है कि वह शिक्षित हो। बच्चों के माता-पिता बड़े संघर्षो से शिक्षा दिलाते हैं। हमें एक बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि हम शिक्षा न तो अपने लिए ले रहे हैं और न ही अपने परिवार के लिए। हम शिक्षा अपने देश के लिए ले रहे हैं।

ये बातें, जिन्दा शहीद एमएस विट्टा ने कहीं। वे रविवार को मोतीलाल नेहरू प्रौद्योगिकी संस्थान (एम एन एन आई टी) के वार्षिकोत्सव कलरव आविष्कार-२०२४ के अवसर पर बोल रहे थे।

उन्होंने आगे कहा कि नरेन्द्र मोदी ने धारा ३७० हटाकर दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय दिया है। उन्होंने बताया कि बचपन में ही भारत माता की रक्षा और संघर्षों से मिली आजादी को बनाये रखने का संकल्प ले लिया था। कहा कि भारत माँ के लिए १४ बार गोली और बम का निशाना बना हूँ। लेकिन इरादा नहीं बदला। आज भी उस जख्म की सुगन्ध रातरानी औऱ रजनीगन्धा-जैसी आती है। भारत माँ की सेवा का सबको मौका मिलता है।

माइण्ड रीडर सुहानी शाह ने चिट्ठी के माध्यम से भावी टेक्नोक्रेट्स के मन की बात उजागर कर दी। तो पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। उन्होंने मंच पर चार छात्रों को बुलाया। उनके गले में एक-एक आई कार्ड पहना दिया। हर आई कार्ड का अलग नम्बर था। फिर छात्रों से पास रखे चार लिफाफों में से एक-एक उठाने और खोलने को कहा। जिस छात्र को जिस नम्बर का आई कार्ड मिला था, उसके लिफाफे में वही नम्बर रहा, यह देखकर छात्र चौंक गये। सुहानी ने छात्र-छात्राओं के द्वारा लिखी गयी बातों को भी बिना देखे बता दिया। ये आश्चर्यजनक कारनामे देखकर सभी ने दाँतों तले उँगलियाँ दबा लीं। (दैनिक जागरण से साभार)

कहानियाँ हर जगह मौजूद, बदलता गया है इसका स्वरूप

प्रयागराज। कहानियाँ अब लोगों के दैनिक जीवन से दूर होती जा रही हैं। किस्से-कहानी सुनने, सुनाने का दौर पीछे छूट रहा है। सोमवार को उ.प्र. हिन्दुस्तानी एकेडेमी में आयोजित 'कहानी-दर-कहानी' सन्दर्भ 'कहानी पाठ' और पुस्तक प्रदर्शनी में यही चिन्ता व्यक्त की गयी। इसमें ज्योतिर्मयी और शाम्भवी की लिखी कहानियों पर कथाकारों ने चर्चा की। एकेडेमी के सचिव देवेन्द्रप्रताप सिंह ने पुस्तक प्रदर्शनी को देखा।

सचिव ने कहा कि जब से मानव-जीवन है, तभी से कहानी है। चन्दा मामा की कहानी सब ने सुनी होगी। देखा जाय, तो आदिम काल से कहानी है। कहा कि कहानी हर जगह मौजूद है, समय-समय पर इसका स्वरूप बदलता गया। अध्यक्षता करते हुए **प्रो० अनिता गोपेश** ने कहा कि कहानियाँ अपने समय को रेखांकित करती हैं। आज हमारा समाज विसंगतियों से गुजर रहा है। कथाकार और हिन्दी-विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय की आचार्य **प्रो० अलका पाण्डेय** ने अपनी कहानी 'स्वप्न' का पाठ किया। इसमें उन्होंने पहले तो बेटियों के घर में लालन-पालन और उसके बाद ससुराल चले जाने को भावपूर्ण अन्दाज में प्रस्तुत किया। लेखक और कवयित्री ज्योतिर्मयी ने कहा कि दादी-नानी से सुनी कहानियों से हमने कितना कुछ पाया, स्मृतियों में क्या सँजोया-यह महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने 'गली के मुहाने पर' कहानी का

• शेष पृष्ठ तीन पर

अगर बच जाये जिन्दा जमीर फिर तो कविता लिख...

प्रयागराज। मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान एम एन एन आइ टी के वार्षिकोत्सव कलरव में मंगलवार को काव्य-सन्ध्या का आयोजन हुआ। इस अखिल भारतीय काव्य-सन्ध्या में रचनाकारों ने अपनी कविताओं से लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। अध्यक्षता करते हुए पद्मश्री **डॉ० सुरेन्द्र दुबे** ने जहाँ तेरा वजूद किस्तों में बिकता है बता रे तू क्यों कविता लिखता है, लिखना तो गरीबों के लिए लिख, महँगाई पे लिख, बेकारों के लिए लिख, अगर बच जाए जिन्दा जमीर फिर तो कविता लिख सुनाकर वाहवाही लूटी।

कवि **डॉ० श्लेष गौतम** ने अपनी कविता तुमे मिलने की कसक रहती है, ख्वाब मिलने के बुन नहीं पाती, रोज जाती, क्लास में लेकिन सर जो कहते हैं उसे सुन नहीं पाती, सुनाकर कॉलेज के दिनों की तस्वीर दिखायी। जबलपुर की **मणिक दुबे** ने 'मुझके सबसे प्यारा कह लो या आँखों का तारा कह लो, इतना तो हक बनता ही है न खुद को आप हमारा कह लो' सुनाकर तालियाँ पायी। कानपुर से आये **सुरेश अवस्थी** ने 'सिक्के तमाम नकली गला में बैठा हूँ, वक्त ठहरा हुआ भी चला के बैठा हूँ' सुनाया, तो मुरादाबाद के राहुल शर्मा ने 'अगर लिखोगे वसीयत अपनी तो जान पाओगे ये हकीकत' तथा मुम्बई के **चन्दन राय** ने 'इस तरह से बदल के मत जाओ, यूँ अचानक निकल के न जाओ...' सुनाकर श्रोताओं को बाँध लिया। **(दैनिक जागरण से साभार)**

जीत लेगा जिन्दगी की जंग वो हर हाल में, जिसे मुस्कुराना आ गया..

प्रयागराज। दारागंज का निराला चौराहा बुधवार हास्य-कवियों की रचनाओं से खिलखिलाता रहा। आयोजन महाकवि निराला एवं आधुनिक कविता के जनक **डॉ० जगदीश गुप्त** को समर्पित रहा। विभिन्न राज्यों से आये सुविख्यात कवियों ने हास्य रस की ऐसी गंगा बहायी कि सुननेवाले हँस-हँसकर लोटपोट हो गये। संयोजक **राजेश निषाद** ने हास्य कवि-सम्मेलन का उद्देश्य बताया। सांसद **केशरी देवी पटेल**, विधायक **हर्षवर्धन वाजपेयी**, विधायक **पीयूष रंजन निषाद**, भाजपा महानगर अध्यक्ष **राजेन्द्र मिश्र**, भाजपा क्षेत्रीय उपाध्यक्ष **अवधेशचन्द्र गुप्त, रईसचन्द शुक्ल** आदि उपस्थित रहे।

लखनऊ से आयी कवयित्री **शशि श्रेया** ने सुनाया–अनुभवों की धुन बनाना गीत गाना आ गया, आँसुओं को नयन के भीतर छिपाना आ गया, जीत लेगा जिन्दगी की जंग वो हर हाल में, जिसको सारे दर्द सहकर मुस्कुराना आ गया। गीतकार **शैलेन्द्र मधुर** ने सुनाया कि सीएए के लागू होते ही विपक्षी लाल, योगी, मोदी, शाह खेल रहे रंग, अबीर-गुलाल। दिल्ली से आये **सुनहरीलाल** ने सुनाया–सब स्वप्न गये टूट फिर चुनाव आ गये–सौभाग्य गये फूट, फिर चुनाव आ गये। बाराबंकी से आये कवि **विकास बौखल** ने पढ़ा कि किसी खंजर से न तलवार से जोड़ा जाये, सारी दुनिया को चलो प्यार से जोड़ा जाये। वाराणसी से आये सुविख्यात कवि **डण्डा बनारसी** ने–मेरे मामा गवइये हैं वो दीपक राग गाते हैं, जिसको सुनके गदही और गदहे भाग जाते हैं, सुनाकर लोगों को खूब हँसाया। रायबरेली से आये कवि **नर कंकाल** ने सुनाया–न सल्फास खाओ न कलाई काटो जब तक मिले खूब मलाई चाटो। संचालन कर रहीं कवयित्री **आभा श्रीवास्तव 'मधुर'** ने सुनाया कि तन में उमंग भरे नैनों में रंग भरे, हाथों में गुलाल लाल लिये मोरे सजना, मैं खिल के हुई कचनार हाय रे रंगीली हो गयी। **अमित जौनपुरी, प्रियंका शुक्ला, विष्णुदयाल श्रीवास्तव** ने भी रचनाएँ पढ़ीं। **नीरज द्विवेदी, भारत निषाद, सुभाषचन्द्र वैद्य, शिवमनोरथ शुक्ल, राजू श्रीवास्तव, बच्चा पाठक, सोनू निषाद, जयवर्धन त्रिपाठी, सन्तोष चौधरी, सुनील महरा** उपस्थित रहे। **(दैनिक जागरण से साभार)**

भारतीय पद्धति से अनुसन्धान का अभाव

–कृपाशंकर चौबे

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० शिक्षा के भारतीयकरण पर बल तो देती है, किन्तु इस लक्ष्य की पूर्ति तभी सम्भव है, जब ज्ञान के सभी अनुशासनों में भारतीय पद्धति से अनुसन्धान भी हों। विडम्बना यह है कि भारत में विभिन्न विषयों में अनुसन्धान के लिए अभी भी विदेशी पद्धतियाँ अपनायी जा रही हैं। जबकि भारत में अनुसन्धान अथवा गवेषणा या मीमांसा या शोध की प्राचीन परम्परा और पद्धति रही है। गवेषणा शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है। इसका अभिप्राय प्रकाश/ज्ञान की खोज है। अनुसन्धान के मुख्यतः तीन प्रकार हैं–मौलिक, व्यावहारिक या अनुप्रयुक्त और क्रियात्मक अनुसन्धान। इन तीनों प्रकार के अनुसन्धान प्राचीन भारत में हो चुके हैं। भारत के तीन अध्येताओं–डॉ० कपिलकुमार भट्टाचार्य, प्रो० विप्लव लोहो चौधरी और प्रो० रमेश एन० राव ने अपने शोध ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र : ए स्टडी आन कण्टिन्यूटी एण्ड प्रोग्रेस ऑफ इण्डियन कम्युनिकेशन थ्योराइजिंग एण्ड प्रैक्टिस' में वेदों एवं उपनिषदों को मौलिक अनुसन्धान की श्रेणी में, धर्मशास्त्र और नाट्यशास्त्र को अनुप्रयुक्त अनुसन्धान और चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता को क्रियात्मक अनुसन्धान की श्रेणी में रखा है।

ईसा से अलगभग ६०० वर्ष पूर्व कपिल मुनि द्वारा प्रवर्तित सांख्य दर्शन ने तर्कपूर्ण युक्तियुक्त चिन्तन पर बल दिया। वाचस्पति मिश्र ने 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' में लिखा कि इस दुनिया में सभी अनुसन्धानों का उद्देश्य मानव जाति की किसी भी अनसुलझी समस्या का समाधान करना है। उनके अनुसार किसी भी अनुसन्धान को तभी सार्थक माना जाना चाहिए, जब वह इन पाँच शर्तों को सन्तोषजनक ढंग से पूरा करता हो। जैसे–कोई स्पष्ट समस्या होनी चाहिए, जिसके लिए वैज्ञानिक जाँच की आवश्यकता हो। वैज्ञानिक जाँच के माध्यम से उस समस्या का समाधान वांछनीय होना चाहिए। वैज्ञानिक जाँच के माध्यम से सम्भावित समाधान प्राप्य प्रतीत होना चाहिए। समाधान के लिए वैज्ञानिक जाँच को आगे बढ़ाने के साधन उपलब्ध होने चाहिए। वाचस्पति मिश्र के अनुसार त्रिविध दुःख (आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधि-दैविक) को दूर करने के उपाय के लिए ही अनुसन्धान होता है। यानी दुःख दूर करने या किसी समस्या का समाधान वैज्ञानिक विधि से खोजना शोधकर्त्ता का उद्देश्य होना चाहिए। इसी तरह अभिनवगुप्त (दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी) ने भी भारत की अनुसन्धान-पद्धति पर प्रकाश डाला। उन्होंने शोध की विधियों का वर्णन इसप्रकार किया है–प्रासंगिक सामग्री पर ध्यान केन्द्रित करना। अनिवार्य सामग्री को चिह्नित करना। आवश्यक स्पष्टीकरण के साथ सामग्री को सार्थकता प्रदान करना। प्रासंगिक सामग्री के भीतर विरोधाभासों को सम्बोधित करना। मूल कार्य की भावना को अक्षुण्ण रखना। वर्तमान कार्य के उद्देश्य के अनुरूप होना। बहुअर्थी शब्दों, वाक्यों पर विचार-विमर्श, दोहराव के सम्बन्ध की व्याख्या करना। वैध समाधान अथवा निष्कर्ष पर पहुँचना और कार्य को अत्यन्त संक्षिप्तता से पूरा करना।

भारत की प्राचीन अनुसन्धान-पद्धति शोधकर्ता में शोध-वृत्ति जाग्रत कर उसे शोध की महत्ता का बोध कराती है। शोधार्थी को सांगोपांग विश्लेषण-विवेचन के माध्यम से सम्यक्

● *शेष पृष्ठ चार पर*

● पृष्ठ तीन का शेष

भारतीय पद्धति से अनुसन्धान..........

अनुशीलन में सक्षम बनाती है। वेदों, उपनिषदों, धर्मसूत्रों, रामायण, महाभारत और अन्य प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में पाई जानेवाली अनुसन्धान-पद्धति के अनुसरण में अनुसन्धान को बढ़ावा दिये जाने पर ही ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय विद्या की मौलिकता सिद्ध होती रहेगी। भारतीय विद्या की मौलिकता का एक कारण यह है कि पाश्चात्य चिन्तन गणितमूलक है, जबकि भारतीय चिन्तन की भाषा व्याकरणमूलक है। यह देखना आवश्यक है कि अनुसन्धान के उपरान्त सृजित ज्ञान कितना समाजोपयोगी है। भारत के तमाम विश्वविद्यालयों तथा विद्या-केन्द्रों में निरन्तर शोध हो रहे हैं; लेकिन क्या वे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक उत्थान में योगदान कर रहे हैं। उनसे क्या उन समस्याओं को दूर करने में मदद मिल रही है, जिनसे देश जूझ रहा है; जैसे- गरीबी, बेरोजगारी, ऋण-समस्या से जूझते किसानों की आत्महत्या आदि।

भारत में अनुसन्धान के क्षेत्र में एक और विडम्बना है और वह यह कि भारत के तमाम विद्या-केन्द्रों में अनुसन्धान में सन्दर्भ की भी विदेशी शैलियाँ अपनायी जा रही हैं, जो संख्या में मुख्यत: पाँच हैं—एमएलए (माडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन ऑफ अमेरिका), एपीए (अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन), शिकागो, बैंकूवर और हार्वर्ड। भारत में अनुसन्धान में साधारणतया दो प्रकार की सन्दर्भ-व्यवस्थाएँ अपनायी जाती रही हैं। एक-नोट-व्यवस्था तथा दूसरी-कोष्ठकबद्ध व्यवस्था। नोट-व्यवस्था में टिप्पणी क्रमानुसार दी जाती है। फुट नोट्स किसी विचार-अभिमत की पुष्टि अथवा खण्डन में, यहाँ तक कि स्पष्टीकरण में सहायक होते हैं। नोट-व्यवस्था में शिकागो एवं एमएलए शैलियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं। कोष्ठकबद्ध व्यवस्था में आंशिक सन्दर्भ रहता है, जो पाठ के अन्तर्गत कोष्ठक में दिया जाता है। पूरा सन्दर्भ अन्त में दिया जाता है। इस व्यवस्था को हार्वर्ड व्यवस्था अथवा लेखक-दिनांक व्यवस्था भी कहा जाता है। कोष्ठकबद्ध व्यवस्था में एपीए, हार्वर्ड और बैंकूवर सन्दर्भ शैलियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं। कहने की जरूरत नहीं कि भारत की अपनी अनुसन्धान-सन्दर्भ शैली विकसित करने की भी बहुत जरूरत है। यदि ऐसा नहीं किया जाता, तो भारत को ज्ञान से सम्पन्न करने और ज्ञान-आधारित राष्ट्र बनाना कठिन होगा। भारत में भारत की ज्ञान-परम्परा स्थापित होनी चाहिए। **(दैनिक जागरण से साभार)**

● पृष्ठ दो का शेष

कहानियाँ हर जगह मौजूद..........

पाठ किया। **शाम्भवी** ने 'सांझा की धूप' का कहानी पाठ किया। संचालन **अनीता यादव** ने किया। एकेडेमी के प्रशासनिक अधिकारी **गोपाल जी पाण्डेय** ने सभी का आभार जताया। **डॉ० उमा शर्मा, लिली श्रीवास्तव, सरस दरबारी, रचना सक्सेना, स्नेह सुधा, उर्वशी उपाध्याय, विवेक सत्यांशु, जयश्री श्रीवास्तव, अभिषेक केसरवानी, रवि, मधुकर मिश्रा** आदि उपस्थित रहे।

भारत की सामासिक संस्कृति और हिन्दी

–डॉ. परमानन्द पांचाल

भाषा, संस्कृति की वाहिका होती है और उसके साहित्य में उसकी संस्कृति की गहरी झलक मिलती है। इसलिए भाषा और संस्कृति का अविच्छेद्य सम्बन्ध होता है। मैडलवान ने ठीक ही लिखा है कि प्रत्येक संस्कृति का सार-तत्त्व उसकी भाषा में अभिव्यक्ति पा सकता है और पाया करता है। भाषा न केवल संस्कृति का अविभाज्य अंग है, अपितु उसकी कुंजी भी है। भाषा के बिना यदि संस्कृति पंगु है, तो संस्कृति के अभाव में भाषा अन्धी। भारतीय संस्कृति विश्व की एक प्राचीनतम संस्कृति है, जिसकी आभा विभिन्न संघर्षों से गुजरने तथा हजारों वर्षों की यात्रा करने के बावजूद धूमिल नहीं हुई है। वह प्रत्येक परिस्थिति, घात-प्रतिघात और उतार-चढ़ाव को झेलते हुए एक रत्न की भाँति आज भी देदीप्यमान है। इसी रहस्यमयी चमत्कार से चकित होकर उर्दू के प्रसिद्ध कवि सर मुहम्मद इकबाल ने कहा था–"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा।"

वह कौन-सी बात है, जिसके कारण इसका अस्तित्व और उसकी अस्मिता अक्षुण्ण रही है? भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र उसकी उदारता, सहिष्णुता और समस्त वसुधा को एक कुटुम्ब मानने में है। सत्य की खोज इसका चरम लक्ष्य रहा है। तभी तो कहा गया है कि "एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति", अर्थात् एक सत्य को विद्वान् अनेक प्रकार कहते हैं। यही विचारधारा भरतीय संस्कृति का प्राणस्पन्दन रही है। अत: वह विरोधों में समन्वय को और असत् में सत् को ढूँढ़ती रही। भारतीय संस्कृति, गंगा की तरह निरन्तर प्रवाहमान, समुद्र की तरह विशाल और गिरि-शिखरों की भाँति उदात्त है। वह विद्या-अविद्या, श्रेय-प्रेय, अभ्युदय, नि:श्रेयस, सभी को आत्मसात् करती हुई विश्व के कोने-काने को ज्योतिमय करती आ रही है।

अच्छे गुण कहीं से भी मिलें, उन्हें प्राप्त करने की लालसा सदा इसमें रही है। ऋग्वेद का यह आभार सन्देश "आ नो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वत:", अर्थात् प्रत्येक दिशा से शुभ एवं सुन्दर विचार हमें प्राप्त हों, यही इसकी गुण-ग्राह्यता का प्रमाण है। हिन्दी इसी सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

हिन्दी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए सर्वप्रथम हमें इसके मुहावरों और लोकोक्तियों पर ध्यान देना होगा। मुहावरे और लोकोक्तियाँ किसी भी जीवित भाषा के प्राण होते हैं। इनके पीछे उनका सांस्कृतिक इतिहास बोलता है। ये जन-सामान्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति का समान रूप से माध्यम होते हैं, किसी वर्ग-विशेष की नहीं। ये मुहावरे और कहावतें ही हमारी सांस्कृतिक एकता की कसौटी हैं। यदि हम हिन्दी भाषा में प्रचलित मुहावरों और लोकोक्तियों पर एक दृष्टि डालें, तो हम देखेंगे कि इनके पीछे जो जातिगत संस्कार छिपे हैं, वे स्वत: भारत की सामासिक संस्कृति की कहानी कहते हैं, जो भारत के किसी विशिष्ट वर्ग, सम्प्रदाय या धार्मिक मान्यताओं के लिए नहीं, वरन् सभी के लिए समान हैं।

हिन्दी के कुछ मुहावरों और लोकोक्तियों को देखिए-मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक; गये थे नमाज छुड़ाने, रोज़े गले पड़ गये; मिल गयी रोजी नहीं तो रोजा; खुदा अपने घोड़ों को हलुवा खिलाता है; अब मिया बीबी राजी तो क्या करेगा काजी; मुल्ला की मारी हलाल; सत्तर चूहे खा के बिल्ली हज को चली; तकदीर का सिकन्दर होना; खैरात बँटना; ईद का चाँद होना; खलीफा बनना; नमक हलाल होना; नमक हरामी करना;

● शेष पृष्ठ पाँच पर

● *पृष्ठ चार का शेष*

भारत की सामासिक संस्कृति..............

कब्र में पाँव लटकना; कब्र खोदना; मियाँ के सर; तौबा करना; बाबा आदम के जमाने का; अल्लाह अल्लाह खैर सल्लाह आदि ऐसे न जाने कितने और मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ हमारी इस मिलीजुली संस्कृति को वाणी देते हैं।

इन मुहावरों को क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सभी बोलते हैं। यही हिन्दी की सामासिक संस्कृति की विरासत है। स्पष्ट है कि इसका जन्म इस्लामी संस्कारों से हुआ और अब ये हिन्दी की थाती बन गये हैं और सभी वर्गों की समान रूप से अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। हिन्दी भाषा और साहित्य का समग्र इतिहास हमारी समन्वित संस्कृति का इतिहास है। इसके विकास में आरम्भ से ही विभिन्न मतानुयाइयों और धर्मावलम्बियों का योगदान रहा है। हिन्दी की सेवा हिन्दीतर भाषियों में ही नहीं, विदेशियों ने भी की है। साहित्य की इस गंगा-जमुना धारा के प्रवाह में, माँ सरस्वती के न जाने कितने उपासकों ने अपने श्रद्धा-कलश उड़ेले हैं, न जाने कितने भगीरथ पुत्रों ने इसके लिए कठोर परिश्रम किये हैं और न जाने कितने सन्तों और फकीरों के उपदेशों की यह वाग्धारा रही है। आरम्भिक काल में सिद्धों, जैनियों, नाथों, सन्तों और सूफियों ने इसी भाषा में जनता को सन्देश दिये। यद्यपि इनकी भाषा में हिन्दी का वह प्राचीन रूप मिलता है, जो प्राकृत और अपभ्रंश के समीप है। नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक गोरखनाथ की यह वाणी– "तुम्बी में तिर लोक स्माया त्रिवेणी रिब चन्दा/बुझो रे ब्रंभ गियानी अनहद नाथ अभंगा।" भी इसी भाषा के माध्यम से जन-सामान्य तक पहुँची थी। सिद्ध साहित्य में कण्हपा की यह उक्ति–

"जिमि लोण विलिज्जई पाणिरगहं,
तिमधरिण लइचित।
समरस जाई तक्खणे,
जई पुणुते समणित।"

(जिस प्रकार पानी में नमक घुल जाता है, उसी प्रकार धरणी से प्रेम में लीन हो जाने पर तत्काल समरस की अवस्था उत्पन्न हो जाती है।)

देश में सांस्कृतिक समन्वय के समय-समय पर जो प्रयास होते रहे, उनमें हिन्दी भाषा का विशेष योगदान रहा है। दक्षिण में जब भक्ति-आन्दोलन का सूत्रपात होता है, तो उसका प्रभाव उत्तर में भी सन्तों की वाणियों में परिलक्षित होता है। हिन्दी-साहित्य का समस्त भक्तिकाल उससे अनुप्राणित है। कबीर ने कहा है–

"भगति द्रविड़ उपजी लाए रामानंद" गुरुनानक, कबीर, तुलसी, सूर, दादू, मीरा सभी ने धार्कि सहिष्णुता, सौहार्द और प्रेम का उपदेश दिया और हिन्दू-मुस्लिम एकता की भावना की वृद्धि में योगदान किया। शैव और वैष्णव जैसे मतों में समन्वय की भावना स्थापित करने में तुलसीदास-जैसे सन्तों ने अथक प्रयास किये। तुलसीदास के राम तो स्पष्ट कहते हैं–

"सिव द्रोही मम भगत कहावा,
सो नर सपनेहुँ मोहि न भावा।"

इतिहास-चक्र के साथ इस्लाम धर्म का प्रवेश भी इस देश में हुआ और मुसलमान ने हिन्दुओं के साथ कन्धे-कन्धा मिलाकर इस देश के विकास में योगदान दिया और हिन्दी, हिन्दुओं या किसी वर्ग विशेष की भाषा नहीं रही। रामधारी सिंह 'दिनकर' के शब्दों में, "हिन्दी-साहित्य केवल हिन्दू कवियों का ही निर्माण नहीं है, उसकी शक्ति और शोभा मुसलमानों ने भी बढ़ायी है। अमीर खुसरो, कबीर, जायसी, रहीम और रसखान, अनीस अहमद और कमाल, ताज और तानसेन, नेवाज और फखरुद्दीन, आलम और शेख तथा मुबारक एवं रसलीन ये सब-के-सब मुसलमान थे। हिन्दी की परम्परा साम्प्रदायिकता की परम्परा नहीं, एकता, उदारता, सामाजिक समानता और वैयक्तिक स्वतन्त्रता की परम्परा है।"

सच, पूछिए तो इस भाषा को यह नाम भी हिन्दुओं ने नहीं दिया। श्री पद्म सिंह शर्मा लिखते हैं कि हिन्दी नाम की सृष्टि हिन्दुओं ने नहीं की और न उन्होंने इसका प्रचार ही किया है। उन्होंने तो सर्वथा इसके लिए 'भाषा' या 'भाखा' शब्द का ही प्रयोग किया है।

भाषा भक्ति घोर मति मेरी।
–तुलसीदास

भाषा के लिए 'हिन्दी' शब्द के नामकरण का सारा श्रेय मुसलमान लेखकों और कवियों को ही जाता है। केशवदास भी इस भाषा में रचना करने में ग्लानि का अनुभव करते हैं–

भाषा बोली न जानही
जिनके कुल के दास,
तिन भाषा कविता करी,
जड़मति केशवदास।

हिन्दी जिस समय अपने प्राकृत और अपभ्रंश-काल से गुजर रही थी, तभी से मुसलमानों ने इसके विकास में अपना योगदान आरम्भ कर दिया था। सन्देशरासक लिखनेवाला अब्दुल रहमान या अद्दहमाण ही थे, जो शाहबुद्दीन गौरी के समय से पहले के कवि हैं। अमीर खुसरो (१२५३-१३२५) ने उल्लेख किया है कि उनसे भी पहले ख्वाजा मसऊद साऊद सुलेमान (११२५ ई. के पास) ने हिन्दी में भी रचनाएँ की थीं।

मुस्लिम साहित्यकारों ने पहले इसे हिन्दुई, हिन्दवी कहा, फिर 'हिन्दी'। आज से लगभग ७०० वर्ष पूर्व इसी हिन्दवी (हिन्दी) भाषा पर रीझकर अमीर खुसरो ने गर्व से कहा था–

चूं मन तूती-हिंदम अर रास्त पुरसी
जे इन हिंदवी पुरम ता नगज़ गोयम।
(किरानुस्सादेन)

(अर्थात् मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ। अगर मुझसे सच पूछते हो, तो हिन्दवी में पूछो, जिसमें मैं कहीं अच्छी बातें बता सकूँ।)

इन्होंने अपनी रचना 'खालिक बारी' में ५५ बार 'हिन्दवी' और १२ बार 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग किया है।

हिन्दी शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग हमें दक्खिनी हिन्दी के मुस्लिम कवियों में भी मिलता है। बुराहानुद्दीन जानम (१५६० ई.) ने अपने भाषा को 'हिन्दी' ही कहा–

"यह सब बोलू हिन्दी बोल,
पन तू अनु भौ सेती खोल।
ऐब न राखे हिन्दी बोल,
मानो तो चख देख ढंडोल।"

'बहरी' भी अपनी रचना 'मन लगन' में अपनी भाषा को 'हिन्दी' बताता है :

हिन्दी तो जबाँ च है हमारी,
कहने न लग हमन के भारी।

इसप्रकार दक्खिनी के इन कवियों ने जो प्राय: इस्लाम के अनुयायी थे, दक्खिनी हिन्दी में अपनी रचना कर हिन्दी-साहित्य को मालामाल कर दिया। यहाँ यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि जिस काल में उत्तर भारत में सूर, तुलसी और मीरा की स्वर-लहरियाँ गूँज रही थीं, उसी समय 'नवरस' और 'सबरस'-जैसी रचनाओं से दक्षिण-पथ का जनमानस भी रसविभोर हो रहा था। कदम राव, पदम राव, कुतुबमुश्तरी, फूलबदन व माहियार और मैना सतवन्ती-जैसे प्रेमाख्यानों से साहित्य के भण्डार को भरा जा रहा था।

सूफी कवि तो भारतीय रंग में रँगे ही थे। सूफियों का तसव्वुफ भारत के अद्वैत से प्रभावित था। ये सूफी ब्रह्म-ज्ञानी, अध्यात्मवादी और सभी धर्मों से प्रेम करनेवाले थे। सूफी इस्लाम के अन्तर्गत रहस्यवादी साधक माने जाते हैं। हिन्दी के सूफी कवियों ने, तसव्वुफ के अनुसार 'प्रेम की पीर' को ही साधना का मूल मन्त्र माना है। भरतीय कथानक में रूढ़ियों (श्रवण-दर्शन, चित्र-दर्शन, स्वप्न-दर्शन, सिंहलद्वीप, पद्मिनी आदि) का प्रयोग कर सूफियों ने ईरानी मसनवी शैली और भारतीय परम्परा का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है।

यद्यपि दक्षिण और उत्तर के इन मुस्लिम कवियों ने उस समय अधिकतर फारसी लिपि में ही लिखा, किन्तु उनकी भाषा वही हिन्दी थी, जो नागरी लिपि में लिखी जा रही थी। जब मुसलमानों में शुद्ध भाषा लिखने का आन्दोलन जोर पकड़ने लगा और नूर मुहम्मद-जैसे लेखकों पर हिन्दी में लिखने पर कटाक्ष किया गया, तो उसने उत्तर में कहा–

हिन्दू मग पर पांव न रखेउ,
को जो बहुते भाखेउ,

● *शेष पृष्ठ बारह पर*

सम्मेलन के प्रकाशन

सम्पादित पुस्तकें

* १. हरिश्चन्द्र मैगजीन	संपा० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	२५०.००
२. करुणाभरण नाटक (लच्छीराम)	संपा० डॉ० योगेन्द्रप्रताप सिंह	२०.००
* ३. गोरखबानी (गोरखनाथ)	संपा० डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल	अप्राप्य
४. डंगवै कथा तथा चक्रव्यूह कथा (भीम कवि)	संपा० डॉ० शिवगोपाल मिश्र	अप्राप्य
५. दूषणोल्लास (गोविन्ददास)	संपा० श्री बेनीबहादुर सिंह	१६.००
६. देव शब्द रसायन (महाकवि देवदत्त)	संपा० श्री जानकीनाथ सिंह 'मनोज'	२०.००
७. नवरसरंग (लोकमणि मिश्र)	संपा० श्री हरिमोहन मालवीय	१०.००
८. प्रागन कृत भँवरगीत (प्रागन कवि)	संपा० श्री हरिमोहन मालवीय	२०.००
९. बालचंद बत्तीसी (मुनि बालचंद)	संपा० श्री हरिमोहन मालवीय	२०.००
१०. माधवानल नाटक (राजकवि केस)	संपा० डॉ० सत्येन्द्रजी वर्मा	२०.००
११. रतन हजारा (महाराज पृथ्वी-सिंह 'रसनिधि')	संपा० श्री हरिमोहन मालवीय	२०.००
१२. विद्वन्मोद तरंगिणी (संकलन-कर्त्ता श्री सुब्बासिंह 'श्रीधर')	संपा० डॉ० किशोरीलाल	१००.००
१३. जोरावर प्रकास	संपा० डॉ० योगेन्द्रप्रताप सिंह	१००.००
१४. बिहारी सतसई : अनवर चन्द्रिका टीका	संपा० श्री हरिमोहन मालवीय	७५.००
*१५. कबीर और कबीरपंथ	संपा० डॉ० केदारनाथ द्विवेदी	१००.००
*१६. अनुराग-बाँसुरी	संपा० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल श्री चन्द्रबली पाण्डेय	३०.००
*१७. भारतीय भाषा साहित्य	संपा० श्री विभूति मिश्र	१२०.००
*१८. लोमश संहिता	संपा० डॉ० गिरिजाशंकर शास्त्री	अप्राप्य
१९. कृष्ण चन्द्रिका (वीर कविकृत)	संपा० डॉ० योगेन्द्रप्रताप सिंह	१६.००

प्राचीन काव्य-संग्रह

१. काव्य-संग्रह–प्रथम भाग	संपा० श्री करुणापति त्रिपाठी	२०.००
२. तुलसी सुषमा	संपा० डॉ० रामप्रकाश अग्रवाल	अप्राप्य
३. नवीन तुलसी संग्रह	संपा० डॉ० माताप्रसाद गुप्त	अप्राप्य
४. प्रथमा काव्य-संग्रह-भाग १	संपा० श्री करुणापति त्रिपाठी	अप्राप्य
*५. बिहारी वैभव	संपा० डॉ० विजयपाल सिंह	अप्राप्य
*६. बिहारी संग्रह	संपा० श्री वियोगी हरि	अप्राप्य
*७. ब्रजमाधुरीसार	संपा श्री वियोगी हरि	१५०.००
*८. मीराँबाई की पदावली	संपा० आचार्य परशुराम चतुर्वेदी	अप्राप्य
*९. विद्यापतिका (पदसंग्रह)	संपा० डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी	८०.००
*१०. सूफी काव्य-संग्रह	संपा० आचार्य परशुराम चतुर्वेदी	१००.००
*११. सूर-पद-पंचशती	संपा० आचार्य सीताराम चतुर्वेदी	३०.००
*१२. सूर पदावली	संपा० श्री गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'	अप्राप्य
*१३. सूर-सुषमा	संपा० डॉ० मुंशीराम शर्मा 'सोम'	२०.००
*१४. विद्यापति पद्यसंग्रह	श्री सतीशचन्द्र राय	अप्राप्य
*१५. दक्खिनी हिन्दी काव्य चयनिका	डॉ० रहमत उल्लाह	४०.००
*१६. कबीर संग्रह	संपा० आचार्य सीताराम चतुर्वेदी	४०.००

आधुनिक कविमाला

*१. आधुनिक कवि–भाग १	श्रीमती महादेवी वर्मा	६०.००
*२. आधुनिक कवि–भाग २	श्री सुमित्रानन्दन पन्त	३०.००
*३. आधुनिक कवि–भाग ३	डॉ० रामकुमार वर्मा	३०.००
४. आधुनिक कवि–भाग ४	श्री ठाकुर गोपालशरण सिंह	४०.००
५. आधुनिक कवि–भाग ५	श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४०.००
६. आधुनिक कवि–भाग ६	श्री माखनलाल चतुर्वेदी	४०.००
७. आधुनिक कवि–भाग ७	श्री हरिवंशराय 'बच्चन'	४०.००
८. आधुनिक कवि–भाग ८	श्री रामनरेश त्रिपाठी	४०.००
*९. आधुनिक कवि–भाग ९	श्री नरेन्द्र शर्मा	१५.००
१०. आधुनिक कवि–भाग १०	श्री भगवतीचरण वर्मा	अप्राप्य
११. आधुनिक कवि–भाग ११	श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	१५.००
१२. आधुनिक कवि–भाग १२	श्री गुरुभक्त सिंह 'भक्त'	१५.००
१३. आधुनिक कवि–भाग १३	श्री बालकृष्ण राव	१५.००
१४. आधुनिक कवि–भाग १४	श्री जानकीवल्लभ शास्त्री	१५.००
१५. आधुनिक कवि–भाग १५	श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा	अप्राप्य
१६. आधुनिक कवि–भाग १६	श्री केदारनाथ अग्रवाल	१५.००
१७. आधुनिक कवि–भाग १७	श्री श्यामनारायण पाण्डेय	१५.००
१८. आधुनिक कवि–भाग १८	श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	१५.००
१९. आधुनिक कवि–भाग १९	श्री गुलाब खण्डेलवाल	अप्राप्य
२०. आधुनिक कवि–भाग २०	श्री रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'	१८.००
२१. आधुनिक कवि–भाग २१	श्री नरेश मेहता	अप्राप्य
२२. आधुनिक कवि–भाग २२	डॉ० श्रीपालसिंह 'क्षेम'	४०.००
२३. आधुनिक कवि–भाग २३	श्री अशोक वाजपेयी	१००.००
२४. आधुनिक कवि–भाग २४	डॉ० रमेशचन्द शाह	२००.००

गद्यगीत

*१. मधुनीर (दो रंगों में)	डॉ० माधवप्रसाद पाण्डेय	२०.००
२. मधुमास का गायक	डॉ० माधवप्रसाद पाण्डेय	२०.००
३. स्वर्णनीरा (गद्यगीत)	डॉ० माधवप्रसाद पाण्डेय	१५०.००

• *शेष पृष्ठ सात पर*

• पृष्ठ छः का शेष

सम्मेलन के प्रकाशन.............

काव्यशास्त्र

*१. काव्यांग कल्पद्रुम — डॉ० प्रभात मिश्र शास्त्री — ५०.००
२. काव्यालंकार सार संग्रह एवं लघुवृत्ति की व्याख्या — डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी — ५०.००
३. रस और रसास्वादन — डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा — १०.००

आधुनिक काव्य

१. शैवाल — श्री रमाशंकर शुक्ल 'हृदय' — ३०.००
२. सप्त स्वर — श्री ओंकारनाथ त्रिपाठी 'ॐ' — २०.००
३. प्रतापनारायण मिश्र कवितावली — संपा० श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी — ३०.००
४. अमृत कविताएँ — संपा० डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र — ५०.००
५. अमृत भारती — श्री राधाकान्त मिश्र — २००.००
६. मोती पलकों के — श्रीमती सुशीला मिश्रा — ६०.००
७. कुतुबन कृत मृगावती — प्रका०श्री गोपालचन्द्र सिंह — अप्राप्य

आधुनिक काव्य संग्रह

*१.आधुनिक कविता-संकलन — संपा० डॉ० श्रीप्रसाद — ७०.००
*२.आधुनिक वीर काव्य — संपा० श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी — २०.००
*३.काव्य-संग्रह–द्वितीय भाग — संपा० श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' — अप्राप्य
*४.नवीन पद्य-संग्रह — संपा० श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी — ९०.००
५.प्रथमा काव्य-संग्रह–भाग २ — संपा० श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' — अप्राप्य
६.अभिनव काव्य-संग्रह — संपा० डॉ० नरेन्द्रकुमार शर्मा — अप्राप्य

उपन्यास

*१. हार (स्व० पन्त जी के हस्ताक्षर से युक्त) — श्री सुमित्रानन्दन पन्त — ४०.००
*२. क्या है पाप? — श्रीचिवकुल पुरुषोत्तम — अप्राप्य
(तेलुगु उपन्यास 'एदि पापम्' का हिन्दी-अनुवाद) अनु० श्री सूर्यनाथ उपायाय

कहानी

*१. अभिनव कहानी-संग्रह — संपा० डॉ० सत्यनारायण त्रिपाठी — २०.००
२. आत्मघात — श्री आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव — २०.००
३. कहानी-कुंज — संपा० श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी — अप्राप्य
*४. नूतन कहानी-संग्रह — संपा० डॉ० केशवप्रसाद सिंह — १००.००
*५. आधुनिक गद्यसंग्रह — संपा० डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल — १२०.००

जीवनी

१. आचार्य सायण और माधव — श्री बलदेव उपाध्याय — अप्राप्य
२. कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी — श्री बनारसीदास चतुर्वेदी — १०.००
*३. महाकवि सूरदास और उनकी प्रतिभा — आचार्य सीताराम चतुर्वेदी — १०.००
४. राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन — श्री लक्ष्मीनारायण सिंह — ४०.००
५. सनयात सेन — श्री भूदेव शर्मा — २०.००
६. राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन : व्यक्ति और संस्था — प्रधान संपा० प्रभात शास्त्री, संपा० डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल — ४००.००
७. सोपानदीप (महामना मदनमोहन मालवीय का जीवन चरित) — श्री चन्द्रप्रकाश पाण्डेय — ७०.००

ग्रन्थावली

१. प्रेमघन-सर्वस्व प्रथम भाग (काव्य) — चौधरी बदरीनारायण उपाध्याय 'प्रेमघन' संपा० श्री प्रभाकेश्वरप्रसाद उपाध्याय श्री दिनेशनारायण उपाध्याय — ५०.००
२. प्रेमघन सर्वस्व द्वितीय भाग (गद्य) — ,, ,, — ३५०.००
३. महापुरुष शंकरदेव ब्रजबुलि ग्रन्थावली — डॉ० लक्ष्मीशंकर गुप्त — ३५.००
४. सनेही रचनावली — संपा० डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल — अप्राप्य

नाटक एवं एकांकी

*१. अभिनव एकांकी-संग्रह — संपा० डॉ० विजयपाल सिंह — ५०.००
२. आत्मत्याग — श्री आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव — २०.००
३. कवि कालिदास — श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी — अप्राप्य
४. दमयन्ती स्वयंवर — पं० बालकृष्ण भट्ट — अप्राप्य
*५. आचार्य विष्णुगुप्त — आचार्य सीताराम चतुर्वेदी — ६०.००

नाटक (अनूदित)

१. नागानन्द — महाकवि हर्ष, अनु० श्री गंगाधर इन्दूरकर — अप्राप्य
२. प्रतिज्ञा यौगंधरायण — महाकवि भास, अनु० श्री हरदयालु सिंह — २०.००
३. प्रियदर्शिका — महाकवि हर्ष, अनु० श्री गंगाधर इन्दूरकर — २०.००
४. भास के तीन नाटक (कर्णभार, दूतवाक्य एवं मध्यम व्यायोग) — महाकवि भास, अनु० श्री हरदयालु सिंह — अप्राप्य
५. रत्नावली — महाकवि हर्ष, अनु० श्री गंगाधर इन्दूरकर — अप्राप्य
६. शकुन्तला नाटक (मूल-अभिज्ञान शाकुन्तलम्) — महाकवि कालिदास, अनु० राजा लक्ष्मण सिंह — अप्राप्य
७. स्वप्नवासवदत्ता — महाकवि भास, अनु० श्री हरदयालु सिंह — अप्राप्य

लेख एवं निबन्ध-संग्रह

१. इतना तो जानो (मूल-गुजराती 'आटलु तो जाणजो') — श्री नरहरि द्वारकादास पारीख, अनु० पं० रामनरेश त्रिपाठी — अप्राप्य
२. एकता — आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय — २०.००
*३. निबन्धालोक — संपा० श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री — २०.००

• शेष पृष्ठ आठ पर

● पृष्ठ सात का शेष

सम्मेलन के प्रकाशन.............

*४. भट्ट-निबन्धावली–भाग १	संपा० श्री देवीदत्त शुक्ल श्री धनंजय भट्ट	८०.००
*५. संक्षिप्त हिन्दी भाषा सार	संपा० लाला भगवानदीन	अप्राप्य
*६. हिन्दी की दशा और पत्रकारिता पण्डित बालकृष्ण भट्ट	संपा० श्री धनंजय भट्ट 'सरल'	अप्राप्य
*७. हिन्दी गद्य पारिजात	संपा० डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल	अप्राप्य
*८. निबन्ध निचय	डॉ० शारदारंजन शुक्ल	७५.००
*९. आधुनिक निबन्धावली	डॉ० विद्यानिवास मिश्र	१५.००
*१०. महात्मा टालस्टाय के विचार	अनु० श्री शीतला सहाय	अप्राप्य

अनुशीलन-ग्रन्थ

१. अष्टछाप और वल्लभ-सम्प्रदाय भाग–१	डॉ० दीनदयाल गुप्त	अप्राप्य
२. अष्टछाप और वल्लभ-सम्प्रदाय भाग–२	डॉ० दीनदयाल गुप्त	९००.००
३. आधुनिक हिन्दी कविता में गीतितत्त्व	डॉ० सच्चिदानन्द तिवारी	१६.००
४. कृष्णकाव्य में सौन्दर्यबोध एवं रसानुभूति	डॉ० मीरा श्रीवास्तव	५०.००
५. क्रान्तदर्शी कवि तुलसी	श्री श्रीनारायण सिंह	६०.००
६. क्रान्तिकारी तुलसी	श्री श्रीनारायण सिंह	४०.००
७. ज्योति विहग (महाकवि पन्त के काव्य की आलोचना)	श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी	४०.००
*८. तुलसी दर्शन	डॉ० बलदेवप्रसाद मिश्र	अप्राप्य
*९. निराला-साहित्य-सन्दर्भ		१५०.००
१०. पुराणगत वेद विषयक सामग्री का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ० रामशंकर भट्टाचार्य	अप्राप्य
११. प्रबोध चन्द्रोदय और उसकी हिन्दी परम्परा	डॉ० सरोज अग्रवाल	५०.००
१२. मध्ययुगीन सगुण एवं निर्गुण हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० आशा गुप्ता	अप्राप्य
*१३. मानस चिन्तन	संपा० आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री	१५०.००
१४. मानस में रीतितत्त्व	स्व० श्री वैद्यनाथ सिंह	अप्राप्य
१५. मीराँ और आण्डाल का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० ना० सुन्दरम्	अप्राप्य
*१६. मीराँबाई	डॉ० श्रीकृष्णलाल	अप्राप्य
१७. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की अन्तर्कथाओं के स्रोत	डॉ० शशि अग्रवाल	अप्राप्य
१८. रीतिकालीन हिन्दी-वीरकाव्य	डॉ० भगवानदास तिवारी	५०.००
१९. रूपककार वत्सराज	डॉ० लक्ष्मणनारायण शुक्ल	८०.००
*२०. विचार-विमर्श	श्री चन्द्रबली पाण्डेय	११०.००
२१. विवेचना	श्री इलाचन्द्र जोशी	अप्राप्य
२२. संस्कृत साहित्य में अन्योक्ति	डॉ० राजेन्द्र मिश्र	१००.००
२३. साहित्य और कला	डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा	अप्राप्य
२४. साहित्य और साहित्यकार का दायित्व	श्री विजयदेवनारायण साही	अप्राप्य
*२५. सूर साहित्य में लोकसंस्कृति	श्री आद्याप्रसाद त्रिपाठी	२०.००
*२६. सूर-साहित्य-सन्दर्भ	संपा० श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा	अप्राप्य
२७. सृजनशीलता और सौन्दर्यबोध	डॉ० निशा अग्रवाल	६०.००
२८. स्व० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' : व्यक्तित्व एवं साहित्य	डॉ० विजयकुमार शुक्ल	५०.००
२९. स्वामी रामचरण : जीवनी एवं कृतियों का अध्ययन	डॉ० माधवप्रसाद पाण्डेय	२५०.००
३०. हिन्दी-काव्य में प्रकृति चित्रण	डॉ० किरणकुमारी गुप्ता	अप्राप्य
३१. हिन्दी की हास्य-व्यंग्य विधा का स्वरूप और विकास	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	अप्राप्य
*३२. हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव	श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६०.००
३३. त्रासदी और हिन्दी नाटक	डॉ० माधवप्रसाद पाण्डेय	१००.००
३४. राहुल-रचनामृत	संपा० डॉ० प्रभात मिश्र शास्त्री	२५०.००
३५. श्लेष अलंकार-सिद्धान्त एवं प्रयोग	डॉ० सुरेन्द्रकुमार पाण्डेय	अप्राप्य
३६. शाहपुरा की रामसनेही सन्त काव्य परम्परा	डॉ० माधवप्रसाद पाण्डेय	४००.००
३७. कालिदास की जन्मभूमि– वर्तमान गढ़वाल	डॉ० शिवानन्द नौटियाल	४५०.००
३८. भारतेन्दुकाल का अल्पज्ञात हिन्दी गद्य साहित्य	डॉ० रामनिरञ्जन परिमलेन्दु	४५०.००
*३९. काव्यशास्त्र एवं पालि-साहित्य	डॉ० शिवशंकर त्रिपाठी	९१.००
४०. हिन्दी का नव जागरण काल एवं भाषा विवाद	श्रीश जैसवाल	३००.००
४१. भारतीय छात्र आन्दोलन का इतिहास : स्वाधीनता का दौर (भाग १)	श्री श्यामकृष्ण पाण्डेय सहलेखिका डॉ० रचना सिंह	४२५.००
४२. भारतीय छात्र आन्दोलन का इति० स्वतन्त्रता के बाद (भाग २)	श्री श्यामकृष्ण पाण्डेय	७७५.००

तीर्थ-साहित्य

*१. कैलास मानसरोवर	लेखक-स्वामी प्रणवानन्द संपा० श्री विभूति मिश्र	१००.००
*२. तपोभूमि	लेखक पं० रामगोपाल मिश्र संपा० श्री विभूति मिश्र	१११.००

पत्र-साहित्य

१. पन्त जी और कालाकाँकर	संपा० कुँवर सुरेश सिंह	६०.००

● शेष पृष्ठ नौ पर

● पृष्ठ आठ का शेष

सम्मेलन के प्रकाशन.............

*२. कुछ दिवंगत साहित्यकारों के पत्र	संपा० डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल	अप्राप्य
३. भाषा-साहित्य-संस्कृति के सूत्र (पत्र-समुच्चय)	संपा० डॉ० शिवशंकर त्रिपाठी श्री शेषमणि पाण्डेय	८०.००

लोक-साहित्य

१. भोजपुरी लोकगीत–भाग १	संपा० डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय भूमिका–श्री बलदेव उपाध्याय	अप्राप्य
२. भोजपुरी लोकगीत–भाग २	संपा० डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय भूमिका–डॉ० अमरनाथ झा	२००.००
३. भोजपुरी लोक-संस्कृति	डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय	अप्राप्य
४. अवधी लोकरंग	डॉ० कमला सिंह	३०.००

लोक-साहित्य अनुशीलन

१. गढ़वाल के लोकनृत्य-गीत (सचित्र)	डॉ० शिवानन्द नौटियाल	४२५.००
२. गढ़वाली लोक-साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन	श्री मोहनलाल बाबुलकर	अप्राप्य
३. भोजपुरी लोकगीत में करुण रस	श्री दुर्गाप्रसाद सिंह	अप्राप्य

साहित्य का इतिहास

*१. अंग्रेजी साहित्य का इतिहास	डॉ० एस०पी० खत्री	२००.००
२. पालि साहित्य का इतिहास	डॉ० भरतसिंह उपाध्याय	८५०.००
*३. प्रथमा हिन्दी साहित्य परिचय	श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	१५०.००
*४. बँगला साहित्य की कथा	श्री सुकुमार सेन अनु० भोलानाथ शर्मा	१५०.००
*५. राजस्थानी भाषा और साहित्य	डॉ० मोतीलाल मेनारिया	६५.००
*६. शिवसिंह सरोज	शिवसिंह सेंगर संपा० डॉ० किशोरीलाल गुप्त	२००.००
*७. संक्षिप्त हिन्दी-साहित्य	श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'	अप्राप्य
*८. हिन्दी साहित्य-परिचय	श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	१५०.००
९. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास (प्रथम खण्ड)	नरेश मेहता	५००.००
१०. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास (द्वितीय खण्ड)	लेखक गंगासागर त्रिपाठी	४००.००

राष्ट्रभाषा

१. राजभाषा हिन्दी	सेठ गोविन्ददास	२०.००
२. शासन में नागरी	श्री चन्द्रबली पाण्डेय	अप्राप्य
३. स्वतन्त्रता के पूर्व हिन्दी-संघर्ष का इतिहास	श्री रामगोपाल	अप्राप्य
४. हिन्दी-आन्दोलन	संपा० श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा	३५.००
५. हिन्दी भाषा-आन्दोलन	संपा० श्री लक्ष्मीचन्द्र	४०.००

भाषाशास्त्र

१. बुलन्दशहर एवं खुर्जा तहसीलों की बोलियों का संकालिक अध्ययन	डॉ० महावीरशरण जैन	४०.००
२. दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास	डॉ० श्रीराम शर्मा	अप्राप्य
*३. नागरी अंक और अक्षर	महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, पं० केशव मिश्र	२०.००
४. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप	डॉ० कृष्णलाल हंस	८०.००
*५. सामान्य भाषाविज्ञान	डॉ० बाबूराम सक्सेना	१७५.००
६. हिन्दी पर्यायों का भाषागत अध्ययन	डॉ० बदरीनाथ कपूर	अप्राप्य
७. हिन्दी भाषा का अर्थतात्त्विक विकास	डॉ० शिवनाथ	६०.००
८. हिन्दी विधि शब्दावली	डॉ० मोतीबाबू	७०.००
*९. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि	डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा	५०.००

रचना और व्याकरण

*१. हिन्दी व्याकरण (सैमुएल हेनरी केलाग)	अनु० डॉ० श्रीराम शर्मा	४००.००
*२. लेखन-कला	आचार्य सीताराम चतुर्वेदी	११.००
३. लोकभाषा का व्याकरण	आचार्य धर्मनाथ शर्मा	२०.००
*४. रचना तथा व्याकरण	ले० चन्द्रमौलि सुकुल	७०.००

संस्कृत काव्य एवं रचना

१. रश्मिमाला अथवा जीवन सन्देश गीताञ्जलि	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	२०.००
*२. वाणी विलास–भाग १	श्री रामबालक शास्त्री	४५.००
*३. वाणी विलास–भाग २	श्री रामबालक शास्त्री	अप्राप्य
*४. भज भारतीम्–भाग १	श्री रामबालक शास्त्री	२०.००
*५. संस्कृत सुषमा	डॉ० प्रभात मिश्र 'शास्त्री'	३५.००
*६. संस्कृत साहित्य परिचय	संपा० ईशदत्त पाण्डेय 'श्रीश' डॉ० प्रभात मिश्र 'शास्त्री'	१३.००

अनुवाद-साहित्य

(दस सेट सभी पुराण एक साथ मँगाने पर पाँच प्रतिशत अतिरिक्त छूट दिया जायेगा, परन्तु डाक व्यय एवं पार्सल व्यय अग्रिम भेजने का कष्ट करे।)

पुराण-साहित्य

१. अग्निपुराणम्	अनु० श्री तारिणीश झा डॉ० घनश्याम त्रिपाठी	६००.००
२. कूर्मपुराणम्	अनु० श्री तारिणीश झा डॉ० तमिस्रा चटर्जी	२५०.००
३. बृहन्नारदीयपुराणम् (पूर्वभागः)	अनु० श्री तारिणीश झा	६५०.००
बृहन्नारदीयपुराणम् (उत्तरभागः)	श्री तारिणीश झा	मुद्रणाधीन
४. ब्रह्मपुराणम् (पूर्वभागः)	अनु० श्री तारिणीश झा	५५०.००
ब्रह्मपुराणम् (उत्तरभागः)	अनु० श्री तारिणीश झा	५००.००

● शेष पृष्ठ दस पर

● पृष्ठ नौ का शेष

सम्मेलन के प्रकाशन.............

५. ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (पूर्वभागः)	अनु० श्री तारिणीश झा श्री बाबूराम उपाध्याय	७५०.००
ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (उत्तरभागः)	श्री तारिणीश झा श्री बाबूराम उपाध्याय	८००.००
६. भविष्यमहापुराणम् (प्रथमखण्ड)	अनु० श्री बाबूराम उपाध्याय	अप्राप्य
,, (द्वितीय खण्ड)	,,	३५०.००
,, (तृतीय खण्ड)	,,	अप्राप्य
७. मत्स्यपुराणम् (पूर्वभागः)	अनु० श्री रामप्रताप त्रिपाठी	६५०.००
मत्स्यपुराणम् (उत्तरभागः)	अनु० श्री रामप्रताप त्रिपाठी	६५०.००
८. मार्कण्डेय महापुराणम्	स्व० पं० कन्हैयालाल मिश्र	अप्राप्य
९. वामनपुराण	अनु० पं० दयाशंकर संपा० आचार्य रुद्रप्रसाद मिश्र	४५०.००
१०. वायुपुराणम्	अनु० श्री रामप्रताप त्रिपाठी	६००.००
११. स्कन्दपुराणम् (केदारखण्ड)	अनु० डॉ० शिवानन्द नौटियाल	४५०.००
१२. वामनपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ० (श्रीमती) मालती त्रिपाठी भूमिका–आचार्य बलदेव उपाध्याय	१००.००
१३. मूल रामायणम्	संपा० डॉ० प्रभात मिश्र शास्त्री	२०.००
१४. पुराणों में गंगा	श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री	५०.००

जातक अट्ठकथा

*१. जातक अट्ठकथा (भाग १)		अनु० श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन	अप्राप्य
*२. ,,	२	डॉ० शिवशंकर त्रिपाठी	अप्राप्य
*३. ,,	३	,,	२५.००
*४. ,,	४	,,	३२५.००
*५. ,,	५	,,	३२५.००
*६. ,,	६	,,	३२५.००
*७. ,,	७	,,	३२५.००

गीत-काव्य, महाकाव्य

१. गीतगिरीशम् (कवि नृपतिराम भट्ट कृत)	अनु० डॉ० प्रभात मिश्र 'शास्त्री'	२०.००
२. शिशुपाल वध (महाकाव्य)	अनु० श्री रामप्रताप त्रिपाठी 'शास्त्री'	२००.००
३. संगीत माधवम्	लेखक–गोस्वामी प्रबोधानन्द सरस्वती संपा० डॉ० प्रभात मिश्र 'शास्त्री' अनु० डॉ० शिवशंकर त्रिपाठी	४०.००
४. गीतशंकरः	संपा० डॉ० प्रभात मिश्र 'शास्त्री' अनु० डॉ० शिवशंकर त्रिपाठी	११०.००
५. जानकीगीतम्	संपा० डॉ० प्रभात मिश्र 'शास्त्री' अनु० डॉ० जनार्दनप्रसाद पाण्डेय	५०.००

अन्य अनुवाद

१. सती कण्णगी (तमिल महाकाव्य शिलप्पधिकारम् की कथा का अनुवाद)	अनु० डॉ० गोपालराम	२०.००
२. सच्च संगहो	श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन	७५.००

कला-संस्कृति

१. कला विज्ञान	डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा	२०.००
२. चित्रकला	डॉ० अवध उपाध्याय	अप्राप्य
*३. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता	डॉ० प्रसन्नकुमार आचार्य	१००.००
*४. हनुमान् के देवत्व तथा मूर्ति का विकास	राय गोविन्दचन्द्र	२५०.००

इतिहास-राजनीति

१. अकबर की राज्य व्यवस्था	श्री शेषमणि त्रिपाठी	२०.००
*२. आदर्श नगर व्यवस्था (रिपब्लिक प्लेटोज)	श्री भोलानाथ शर्मा	३००.००
३. कौटिल्य की शासन-पद्धति	श्री भगवानदास केला	अप्राप्य
४. चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास	डॉ० अयोध्याप्रसाद पाण्डेय	अप्राप्य
५. बीसवीं सदी की राजनीतिक विचारधाराएँ	श्री गुर्ती सुब्रह्मण्यम्	अप्राप्य
६. बुद्धकालीन भारतीय भूगोल	डॉ० भरतसिंह उपाध्याय	अप्राप्य
७. हिन्दू राज्यशास्त्र	श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	४०.००
८. वीरसिंहदेव चरित	डॉ० किशोरीलाल	२२५.००
९. बुद्ध पूर्वकालीन इतिहास	श्यामबिहारी मिश्र	अप्राप्य

अर्थशास्त्र

१. गाँवों की समस्याएँ	श्री शंकरसहाय सक्सेना प्रो० प्रेमनारायण माथुर	२०.००
२. ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार	श्री व्योहार राजेन्द्र सिंह	२०.००
३. द्रव्यशास्त्र	श्री मुरलीधर जोशी	२०.००
४. भारतीय ग्राम्य अर्थशास्त्र	श्री शंकरसहाय सक्सेना	१००.००

नीति, धर्म और दर्शन

१. चिन्ता : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन	डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा	२०.००
२. मनुष्य जीवन के लक्ष्य	श्री रामावतार शास्त्री	अप्राप्य
३. मार्क्स और गाँधी का साम्यदर्शन	श्री श्रीनारायण सिंह	६०.००
४. श्री शंकराचार्य का आचार दर्शन	डॉ० रामानन्द तिवारी	६०.००
५. सापेक्ष्यवाद	डॉ० अवध उपाध्याय	२०.००
६. हमारा धर्म और उसकी वैज्ञानिक रूपरेखा	श्री श्रीनारायण सिंह	अप्राप्य

● शेष पृष्ठ ग्यारह पर

● पृष्ठ दस का शेष

सम्मेलन के प्रकाशन.............

आयुर्वेद

१. आयुर्वेद का इतिहास	श्री अत्रिदेव विद्यालंकार	अप्राप्य
२. शतश्लोकी	ले० त्रिमल्लदेव संपा० डॉ० प्रभात मिश्र शास्त्री अनु० श्री रुद्रप्रसाद मिश्र	१०.००

विज्ञान

*१. गति विज्ञान	डॉ० पी० डी० शुक्ल	३०.००
*२. ठोस ज्यामिति	डॉ० ब्रजमोहन	अप्राप्य
*३. ठोस ज्यामिति की कुंजी	डॉ० ब्रजमोहन	२०.००
*४. प्रारम्भिक रसायन	श्री अमीचन्द्र विद्यालंकार	अप्राप्य
*५. बीजगणित	डॉ० झम्मनलाल शर्मा	अप्राप्य

पुस्तकालय-विज्ञान

१. हिन्दी दाशमिक वर्गीकरण पद्धति	संपा० श्री प्रभातकुमार मुखोपाध्याय श्री भूपेन्द्र वन्द्योपाध्याय	२०.००

बाल-साहित्य

१. बाल इतिहास–भाग १	श्री भगवतशरण उपाध्याय	२०.००
२. बाल इतिहास–भाग २	श्री भगवतशरण उपाध्याय	अप्राप्य
३. बाल कथा–प्रथम भाग	श्रीमती कमलाबाई किवे	२०.००
४. बाल कथा–द्वितीय भाग	श्रीमती कमलाबाई किवे	२०.००
५. बाल कवितावली (पद्य)	श्री सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ	अप्राप्य
६. बाल नाटक माला	श्री बालगोविन्द श्रीवास्तव	अप्राप्य
७. बाल भारती (पद्य)	श्री श्रीनाथ सिंह	अप्राप्य
८. बाल रामायण	श्री टी० एम० राघवन्	अप्राप्य
९. बाल विभूति (पद्य)	श्री रसिकेन्द्र	२०.००
१०. वीर शतमन्यु (पद्य)	श्री सभामोहन अवधिया	अप्राप्य

कोश

१. कन्नड़-हिन्दी शब्दकोश	संपा० श्री एन० एस० दक्षिणामूर्ति	अप्राप्य
२. मानक अंग्रेजी-हिन्दी कोश	संपा० डॉ० सत्यप्रकाश पण्डित बलभद्रप्रसाद मिश्र	५७५.००
३. मानक हिन्दी कोश (पाँच खण्डों में)	संपा० श्री रामचन्द्र वर्मा प्रत्येक खण्ड का मूल्य	१७५०.०० ३५०.००
४. संक्षिप्त मानक अंग्रेजी-हिन्दी कोश	संपा० श्री राजेन्द्रसिंह गौड़	२५०.००

पर्याय कोश

१. भूतत्त्व विज्ञान कोश	संपा० श्री एस० सी० सेनगुप्त	अप्राप्य
२. स्नातकोत्तर विज्ञान शब्दावली (वैज्ञानिक एवं तकनीकी (गणितीय भौतिकी)–भाग २ शब्दावली आयोग, भारत सरकार द्वारा निर्मित)		२०.००

पौराणिक प्रतीक-कोश

१. रूपकों की भाषा	श्री रामगोपाल मिश्र	२०.००

सूची-ग्रन्थ

१. पाण्डुलिपियाँ	संपा० श्री वाचस्पति गैरोला	७०.००
२. ब्रजभाषा रीतिशास्त्र ग्रन्थकोश	संपा० श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी	१५.००
३. हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची	संपा० डॉ० रामकुमार वर्मा	अप्राप्य
४. संस्कृत एवं प्राकृत ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची (खण्ड १)	संपा० डॉ० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल	१००.००
५. संस्कृत एवं प्राकृत ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची (खण्ड २)	संपा० डॉ० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल	१००.००
६. हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची	संपा० डॉ० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल	७०.००
७. हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची	संपा० डॉ० पारसनाथ तिवारी	अप्राप्य

अमृतमहोत्सव प्रकाशन

१. सभापतियों के भाषण–भाग १	संपा० श्री लक्ष्मीशंकर व्यास	अप्राप्य
२. सभापतियों के भाषण–भाग २	संपा० डॉ० विद्यानिवास मिश्र	४०.००
३. सभापतियों के भाषण–भाग ३	संपा० डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल	४०.००
४. हिन्दी साहित्य की समस्याएँ	संपा० डॉ० रघुवंश	अप्राप्य
५. राष्ट्रभाषा की समस्याएँ	संपा० भदन्त आनन्द कौसल्यायन	अप्राप्य
६. हिन्दी में विज्ञान लेखन : कुछ समस्याएँ	संपा० डॉ० शिवगोपाल मिश्र	५०.००
७. भारतीय इतिहास, संस्कृति और समाज	संपा० डॉ० गंगासागर तिवारी	अप्राप्य
८. भारतीय दर्शन के जीवन्त प्रश्न	संपा० प्रो० संगमलाल पाण्डेय	२५.००
९. अमृतमहोत्सव-स्मारिका	संपा० डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र	२००.००

शताब्दी वर्ष ग्रन्थमाला

१. सभापतियों के भाषण भाग ४	संपा० श्री विभूति मिश्र	२४०.००
२. हिन्दी साहित्य की समस्याएँ भाग-२	संपा० श्री विभूति मिश्र	२१५.००
३. राष्ट्रभाषा की समस्याएँ भाग-२	संपा० श्री विभूति मिश्र	२००.००
४. भारतीय समाज के ज्वलन्त प्रश्न	संपा० श्री विभूति मिश्र	१७५.००
५. हिन्दी की विकास यात्रा एवं हिन्दी सेवी संस्थाएँ (शताब्दी वर्ष स्मारिका)	संपा० श्री विभूति मिश्र	७००.००

● शेष पृष्ठ बारह पर

● पृष्ठ ग्यारह का शेष

सम्मेलन के प्रकाशन.............

सूक्ति-संग्रह

१. राजर्षि टण्डन वचनामृत संपा० श्री वैकुण्ठनाथ मेहरोत्रा २०.००

चित्रावली

१. राजर्षि टण्डन चित्रावली २०.००

विशेष अधिवेशन स्मारिकाएँ

१. विशेष अधिवेशन स्मारिका संपा० श्री प्रभात मिश्र शास्त्री अप्राप्य
२. हिन्दी स्मारिका संपा० श्री मौलिचन्द्र शर्मा अप्राप्य

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ

१. राष्ट्रभाषा सन्देश
(पाक्षिक प्रकाशन) वार्षिक मूल्य ५०.००
२. सम्मेलन-पत्रिका
(त्रैमासिक शोध-पत्रिका) वार्षिक मूल्य ३००.००

सम्मेलन-पत्रिका के संग्रहणीय तथा महत्त्वपूर्ण विशेषांक

१. कला विशेषांक ७०.००
२. गांधी-टण्डन स्मृति अंक २००.००
३. लोक-संस्कृति विशेषांक १४०.००
४. भारतेन्दु विशेषांक २५०.००
५. श्रद्धांजलि विशेषांक
(पं० मदनमोहन मालवीय, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा पं० रामनरेश त्रिपाठी की स्मृति में प्रकाशित) १५०.००
६. साहित्य-संस्कृति-भाषा विशेषांक २००.००
७. मानस चतु:शती विशेषांक १३०.००
८. श्यामसुन्दरदास जन्मशती विशेषांक ३०.००
९. जन्मशती विशेषांक
(पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, पं० कामताप्रसाद गुरु, पं० पद्मसिंह शर्मा एवं श्री रविशंकर शुक्ल की स्मृति में प्रकाशित) ५०.००
१०. राजर्षि टण्डन जन्मशती विशेषांक ४००.००
११. पत्र-विशेषांक १००.००
१२. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी विशेषांक ७५.००
१३. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जन्मशती विशेषांक अप्राप्य
१४. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी विशेषांक अप्राप्य
१५. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जन्मशती विशेषांक १५०.००
१६. माखनलाल चतुर्वेदी जन्मशती विशेषांक ६०.००
१७. महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जन्मशती विशेषांक १००.००
१८. उत्तरशती विशेषांक खण्ड (१) १५०.००
१९. उत्तरशती विशेषांक खण्ड (२) अप्राप्य
२०. निराला जन्मशती विशेषांक १००.००
२१. निबन्ध निर्देशिका–डॉ० कमला सिंह ६०.००
(सम्मेलन-पत्रिका भाग ७४ तक में प्रकाशित निबन्धों की सूची)

● पृष्ठ पाँच का शेष

भारत की सामासिक संस्कृति.............

मन स्लाम मसल के भाजेऊ,
दीन जेवरी परकस भाजेऊ,
यह मुहम्मदी जन की बोली,
जामो कन्द नवातें बोली।

सिक्ख मत के प्रवर्तक गुरु नानकदेव जी की वाणी से कौन हिन्दी-पाठक अपरिचित होगा। गुरु गोविन्दसिंह जी ने तो दशम ग्रन्थ को इसी भाषा में लिखा था–

दशम कथा भागवत की,
भाषा करी बनाय,
अवर वासना नाहि कुछ,
धर्म युद्ध को चाय।

गुरु ग्रन्थ साहब में अनेक सन्तों की वाणियाँ संगृहीत हैं, जो हमें एकता का सन्देश देती हैं।

हिन्दुओं, मुसलमानों, जैनियों और सिक्खों के अलावा ईसाई मिशनरियों ने भी अपने धर्म-प्रचार के लिए हिन्दी भाषा का सहारा लिया। इसके लिए उन्होंने अनेक ग्रन्थों व व्याकरण की रचना की और हिन्दी के प्रेस स्थापित किये। हिन्दी गद्य-शैली के विकास में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी इनके योगदान को स्वीकार करते हुए लिखते हैं–"हिन्दी भाषा को आधुनिक रूप देने में ईसाई मिशनरियों का महत्त्वपूर्ण हाथ है।"

कैलॉग का व्याकरण और फादर कामिल बुल्के के हिन्दी कोश को कैसे नजरअन्दाज किया जा सकता है। डॉ० जार्ज ग्रियर्सन, पिनकॉट, जॉन किस आदि मिशनरियों के योगदान को हम कैसे भूल सकते हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा हमारी सामासिक संस्कृति की सही अर्थों में संवाहिका रही है और आज भी है। इसीलिए तो भारत के संविधान में भारत की सामासिक संस्कृति के परिरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए हिन्दी के विकास के सम्बन्ध में कुछ निर्देश दिये गये हैं। संविधान के ३५१वें अनुच्छेद में कहा गया है–

"संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रचार बढ़ाए, उसका विकास करे, ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।"

इस निर्देश के परिपालन के लिए हिन्दी निरन्तर प्रयत्नशील रही है। हिन्दी ही वह भाषा है, जो देश की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व आरम्भ से ही करती रही है। इसके विकास में सभी धर्मों, सम्प्रदायों और विभिन्न विचार-धाराओं का योगदान रहा है।

सभी भाषाओं से शब्द ग्रहण करने की इसकी क्षमता रही है, इसी कारण इसकी सरलता और प्रवाह में निरन्तर वृद्धि हुई है।

विश्व में हिन्दीभाषी जहाँ भी गये, उन्होंने अपनी संस्कृति और भाषा के इन गुणों को अक्षुण्ण रखा है। इसका उदाहरण आज हम त्रिनिडाड-टोबैगो, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना तथा दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं। हमें हिन्दी की इस संजीवनी-शक्ति को बनाये रखना है। इन्हीं कारणों से हिन्दी आज विश्व में लोकप्रिय होती जा रही है।

सम्पर्क-२३२-ए, पॉकेट-ए
मयूर विहार, फेज-ए
दिल्ली-११००९१
('भाषा' जुलाई-अगस्त, २००० से साभार)

प्रकाशक तथा मुद्रक : कुन्तक मिश्र, सम्मेलन मुद्रणालय (प्रयाग), इलाहाबाद – २११००३, फोन : ०५३२-२५६४१९३ मूल्य-तीन रुपये : वार्षिक मूल्य ५० रुपये
रजिस्ट्रार न्यूज पेपर्स फॉर इण्डिया, रजिस्ट्रेशन नं० ५९८८२/८०। पंजीकृत संख्या ए० डी० ४८/यू ९ : लाइसेन्स संख्या यू०/एल०-९
Website : http://hindisahityasammelan.org ● **email :** hs.sammelan.alld@gmail.com